INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

विकास के लिए पर्यावरण के क्षेत्र में मनुष्य की नैतिक भूमिका

आलोक गोयल, किरण बड़ेरिया, राकेश कवचे
दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन म.प्र.

मानव जीवन का समूचा अस्तित्व पर्यावरण पर आधारित है। जहाँ पर्यावरण का सन्तुलन विकास मार्ग का सन्तुलन विकास मार्ग की प्रगति को प्रशस्त करता है। वहीं पर्यावरण का असन्तुलन व्यक्ति ही नहीं समूचे समाज और मानव संसाधनों के विनाश का प्रमुख कारण है। सुन्दरलाल बहुगुणा का कहना है कि **''पहले मनुष्य प्रकृति का ही एक अभिन्न हिस्सा था। प्रकृति से उसका रिश्ता अहिंसक और आत्मीयता का था। स्वार्थ और भोग संस्कृति के कारण अब यह न केवल बदल गया बल्कि विकृत हो गया।''**

मनुष्य के अनैतिक आचरण से जहां पर्यावरण सहित लगभग सभी क्षेत्रों में पतन हुआ है वहीं अच्छे आचरण और सामाजिक स्वीकृति से किया जाने वाले व्यावहारिक क्रिया–कलापों से आशातीत उत्थान की आशा भी बनी है। मनु य ने इस परिवर्तन से अपनी व्यक्तिगत छबि ही नहीं बनाई है बल्कि समाज को प्रेरित कर पूरे देश को उपर उठने का अवसर भी दिया है। इसके लिए मनुश्य को निम्न नैतिक दायित्वों का निर्वहन करना चाहिए–

पर्यावरण में कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि हुई है तथा इसके फलस्वरूप वायुमण्डल में कार्बन डाइऑक्साइड गैस की मात्रा बढ़ी है। ग्रीन हाउस प्रभाव का मुख्य कारण इसी गैस की वृद्धि है। इसे मनुष्य रोकने हेतु वैकल्पिक ईंधन का उपयोग कर सकता है।

मनुष्य ने अपने शौक तथा धन प्राप्ति के लालच से वन्य जीवों का शिकार इस सीमा तक किया है कि अनेक प्रजातियां ही लुप्तप्रायः हो चली हैं। इस कुकृत्य पर मनुष्य को स्वप्रेरणा से रोक लगानी होगी। मनुष्य अपने दैनिक जीवन में लकड़ी के उपयोग को कम कर प्लास्टिक अथवा अन्य इसी प्रकार के पदार्थ को काम में लें। इससे वन क्षेत्रों की रक्षा होगी, जल चक्र, वायु चक्र, में गतिरोध नहीं होगा तथा प्रकृति का सन्तुलन बना रहेगा।

यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक विकास किसी विनाश से ही संबंधित हो। देश के पर्यावरण को संतुलित बनाये रखने के लिए मनुष्य को उन तकनीकों का उपयोग करना चाहिए जो विनाश रहित विकास पर आधारित हो। ऐसी स्थिति में यदि उत्पादन कम भी होता हो तो उसे स्वीकार करना चाहिए।

अधिक आबादी की अन्न और आवास की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु देश के घने जंगलों को भारी मात्रा में काट दिया गया है। इससे पर्यावरण हास हुआ है। वन्य जीवों की संख्या में कमी, जलवायु में परिवर्तन, वर्षा की मात्रा में कमी और रेगिस्तानी क्षेत्र में वृद्धि इसके दुखद परिणाम हैं । मनुष्य को जनसंख्या वृद्धि रोकने में सहयोग करना चाहिए।

पेट्रोल चलित वाहनों के उत्सर्जन से निकलने वाली सल्फर डाइऑक्साइड और नाईट्रोजन डाइऑक्ससाइड गैसें वायुमण्डल की आर्द्रता से क्रमशः सल्फ्यूरिक ऐसिड और नाइट्रिक एसिड बनाते हैं। यह तेजाबी वर्षा के रूप में वायुमण्डल से पृथ्वी पर गिरते हैं और मानवजीवन, वनस्पति व सुन्दर भवन तथा प्रतिमाओं को हानि पहुॅचाते हैं। इन वाहनों के उपयोग में कमी की नितांत आवश्यकता है।

गाँवों में बिना रोशनदान वाले कमरों में खाना बनाने वाली ग्रहणियाँ ईंधन से निकलने वाले धुएँ से अनेक रोगों का शिकार होती हैं। उन्हें निर्धूम चूल्हे उपलब्ध कराने चाहिए तथा रसोईघर में खिड़की और रोशनदानों की व्यवस्था होनी चाहिए ।

फ्रिज तथा अन्य अवशीतन करने वाले यन्त्र/उपकरणों के उपयोग के कारण क्लोरोफ्लोरोकार्बन्स वायुमण्डल में ओजोन परत को हानी पहुँचा रहे हैं। अब नयी टैक्नोलॉजी पर आधारित ऐसे उपकरणों का उपयोग ही वांछनीय है जिनसे इस समस्या से न्यूनतम हानि हो। इससे त्वचा कैन्सर के भय से छुटकारा मिलेगा।
परमाणु बम विस्फोट से रडियोएक्टिव प्रदूषण हुआ है। विश्वहित में इस पर रोक होनी चाहिए।
ध्वनि प्रदूषण से बचने के लिए मनु य को अपने घरों में मनोरंजन के साधनों का नीची आवाज में प्रयोग करना चाहिए। इससे बहरापन तथा अनेक मानिसक रोगों से बचाव सम्भव है। आजकल मोबाईल के साथ हेड फोन लगा कर गाने सुनना भी एक समस्या बन गई है, इसका कम प्रयोग करना चाहिए।
वायु, जल, भोजन और आवास की शुद्धता और स्वच्छता जीवन की गुणवत्ता के लिए आवश्यक है। मनु य को इसे हर सम्भव तरीके से प्रदूषण से बचाना चाहिए। याद रखें प्रदूषण से बचाव पर होने वाला व्यय प्रदूषित को ठीक करने के लिए व्यय से कम होता है।
मनुष्य की शहरीकरण की प्रवृत्ति ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है, जिनमें आवास समस्या, भोजन और पानी की कमी, अस्त–व्यस्त जीवन, बढ़ता प्रदूषण आदि प्रमुख हैं। इससे सरकारी व्यवस्थाएँ भी चरमरा गई हैं। इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जाना आवश्यक है। इस हेतु गाँवों में ही वहाँ के लोगों को जीवनयापन हेतु सुविधाएँ उपलब्ध करानी होगी।
प्रकृतिक संसाधन बहुत सीमित हैं। मनुष्य को उनका उपयोग बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण करना चाहिए। संसाधनों का संरक्षण उनके कम उपयोग में ही निहित है।
जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि और प्रतिव्यक्ति अधिक उपयोग से उर्जा की मांग बढ़ रही है। कोयला, पेट्रोल आदि संसाधन समाप्त होने की कगार पर हैं। उर्जा के वैकल्पिक स्त्रोतों से सौर उर्जा को सम्मिलित करना चाहिए। जल उर्जा, अणु उर्जा, वायु उर्जा तथा तापीय उर्जा द्वारा उत्पादित उर्जा में और वृद्धि आवश्यक है। उर्जा का दुरूपयोग रोकें।
भारत में पानी की काफी कमी है और इस कारण देश के अनेक भाग इस कमी से अत्यधिक प्रभावित है। इसके बावजूद भूगर्भ जल के अधिक दोहन से भी जल भण्डार और कम होने लगे है। तथा जल सतह काफी नीचे हो गई है। इस विषम परिस्थिति से बचने कि लिए भूगर्भीय जल के स्वतंत्र उपयोग पर प्रतिबंध लगना चाहिए।
भोज्य पदार्थ उत्पादन हेतु मिट्टी संरक्षण अति आवश्यक है। लेकिन वनों की कटाई तथा मनुष्य द्वारा किये गये अनेक असंगत कार्यों से भूमिक्षरण द्वारा मिट्ट बह रही है। इसे तत्काल रोकने हेतु मनुष्य को सघन वृक्षारोपण तथा सिंचाई के उपयुक्त तरीकों का उपयोग करना चाहिए।
मनुष्य में सोंचने, विचारने और कार्य करने की योग्यता और क्षमता है। वह पर्यावरण को अपने अनुसार परिवर्तित कर सकता है अतः उसे समाज और देशहित में कार्य योजना तैयार कर उसको क्रियान्वित करना चाहिए।
अन्य देशों में हो रहे पर्यावरणीय सुधार के कार्यों की जानकारी लेकर उसे भी अपनी कार्य योजना का आधार बनाना चाहिए। इससे विश्व स्तर पर अपने कार्यों की कुशलता के मूल्यांकन का अवसर मिल सकेगा।
संयुक्त राष्ट्र के विश्व स्तरीय निर्देशों तथा इसी क्रम में विभिन्न स्तर पर आयोजित क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रतिवेदनों से भी पर्यावरण के क्षेत्र में नई दिशा मिल सकती है। इसका उपयोग राष्ट्रहित में रहेगा।
सभी पर्यावरण कार्यों की महत्ता और आवश्यकता को प्रतिपादित करने हेतु पर्यावरण शिक्षा को ही समस्या समाधान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसका व्यापक कार्यक्रम तैयार कर इसे प्रयोग में लेना चाहिए।
उपर्युक्त समेकित बिन्दुओं में पर्यावरण के क्षेत्र में मनुष्य की उस भूमिका को बतानो का प्रयास किया गया है जिससे वह नैतिक रूप से संबद्ध है। दूसरे शब्दो में यह मनु य के, पर्यावरण के क्षेत्र में, नैतिक रूझान को प्रदर्शित करता है। यह रूझान ही बहुत महत्त्वपूर्ण है और आज के अमानवीकरण के युग में नितान्त आवश्यक भी है। रूझान किसी कार्य को करने की मानसिक तत्परता है और इसके मुख्य घटक सोचना, महसूस करना और क्रिया करना है। यहाँ सोचना धारण है, महसूस करना मूल्य और क्रिया करना व्यावहारिक प्रवणता है। अर्थात कोई रूझान धारण, मूल्य और क्रिया के बिना संभव नहीं है। अतः पर्यावरण के क्षेत्र में नैतिकता के

प्रति रूझान में भी यही तीनों बिन्दुओं का सम्मिलित किया जाना आवश्यक है। इससे पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा, पर्यावरण प्रदूषण और पर्यावरण सुधार को निश्चित ही गति मिल सकेगी।
पर्यावरणीय भांपोशीयता की भी खासी आवश्यकता है। अर्थात धारणीय विकास से ही हम भावी पीढ़ी के लिए कुछ बचा पाएंगे। आज मनुष्य स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि जो प्राकृतिक संसाधन हमें विरासत में मिले हैं वैसे ही संसाधनों को आने वाली पीढ़ी के लिए बचाए जा सके। अन्यथा भावी पीढ़ी उतने ही गर्त में जा गिरेगी जितने हम उंचाई पर पहुँच गए हैं। इसके लिए विकास के पेमाने बदलने होंगे। जल, जंगल, जमीन, जानवर आदि प्राकृतिक संसाधनों को आवश्यकतानुसार ही उपयोग करना होगा। हमारी आवश्यकताओं को सीमित करने की नितान्त ही आवश्यकता है। तभी मनु य इस संसार पर राज कर सकेगा अन्यथा भयंकर विनाश लीला में स्वयं को पृथ्वी के गर्त में समा जाने को मजबूर है। क्योंकि प्रकृति दण्ड भी देती है। प्रकृति सभी जीवों की पालनकर्ता है तो संहारकर्ता भी यही है। इसलिए आवश्यक है कि विकास तो किया जाए किन्तु पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए। अन्यथा यह विकास नहीं मानवजाति की विनाश प्रक्रिया का ही एक कारण होगा। अतः यह हमारा नैतिक दायित्व है कि प्रकृति के साथ अधिक छेड़छाड़ न की जाए।